Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol. 03, No.6, January 2025

छोटू राम का ग्रामीण भारत में जागरूकता और स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान

डॉ राजेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
हिन्दू कॉलेज मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

****

शोधसार

छोटू राम, जिन्हें बाबू छोटू राम के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण नेता थे। उनका जन्म 24 नवंबर 1881 में हुआ था। वे एक प्रमुख सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता थे, जिन्होंने ग्रामीण भारत में जागरूकता और संघर्ष को बढ़ावा दिया। उनका मुख्य उद्देश्य किसानों के अधिकारों की रक्षा करना और उनके शोषण के खिलाफ आवाज उठाना था। उन्होंने भारतीय ग्रामीण समाज के विकास के लिए कई सुधारों की दिशा में काम किया। छोटू राम ने किसानों के लिए सिंचाई व्यवस्था, उचित मूल्य पर कृषि उत्पादों की बिक्री, और भूमि सुधार जैसे मुद्दों पर जोर दिया। उन्होंने कृषि क्षेत्र में सुधार लाने के लिए कई आंदोलनों का नेतृत्व किया। इसके अलावा, वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य भी रहे और स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। उनका मानना था कि ग्रामीण भारत की स्थिति को सुधारने के बिना स्वतंत्रता की असली प्राप्ति संभव नहीं है। उनके योगदान को आज भी भारतीय राजनीति और समाज में याद किया जाता है, विशेष रूप से उनके द्वारा उठाए गए किसान हितों के मुद्दों के कारण। उनका जीवन एक प्रेरणा है, जिसने ग्रामीण भारत में जागरूकता और सामाजिक सुधार की दिशा में अहम कदम उठाए।

मुख्य शब्द:- *छोटू राम, स्वतंत्रता संग्राम, ग्रामीण भारत, भारतीय किसान समाज, सामाजिक सुधार, स्वतंत्रता संग्राम*

****

प्रस्तावना

छोटू राम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महान योद्धा और समाज सुधारक थे,जिनका योगदान न केवल स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण था,बल्कि उन्होंने ग्रामीण भारत में सामाजिक जागरूकता और किसान अधिकारों के लिए भी अनेकों कदम उठाए। उनका जीवन और संघर्ष भारतीय किसानों के उत्थान और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए समर्पित था। छोटे राम का जन्म 1889 में उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव में हुआ था। उनका प्रमुख उद्देश्य किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधारना और उनके शोषण को समाप्त करना था। उस समय भारतीय किसानों को भारी करों,ऊंची ब्याज दरों और ब्रिटिश शासन की नीतियों के कारण भयंकर समस्याओं का सामना करना पड़ता था। छोटू राम ने इन समस्याओं का समाधान खोजने के लिए कई आंदोलनों की शुरुआत की और किसानों के हक के लिए आवाज उठाई।

छोटू राम ने भारतीय किसान समाज को संगठित करने के लिए अथक प्रयास किए। वे न केवल एक कुशल नेता थे,बल्कि एक दूरदृष्टा भी थे,जिन्होंने समझा कि किसानों का उत्थान ही भारत के समग्र विकास का आधार हो सकता है। स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण था,क्योंकि उन्होंने भारतीय किसानों को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ने की कोशिश की और ब्रिटिश शासन के खिलाफ जागरूक किया। उनका मानना था कि भारत की स्वतंत्रता तभी संभव है जब ग्रामीण समाज की स्थिति सुधरेगी और किसान शोषण से मुक्त होंगे। उनके द्वारा चलाए गए आंदोलनों ने ग्रामीण भारत में जागरूकता की नई लहर को जन्म दिया। वे न केवल राजनीति में सक्रिय थे,बल्कि समाज में भी जागरूकता फैलाने का कार्य करते थे। छोटू राम ने भारतीय किसानों के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न राजनीतिक मंचों पर संघर्ष किया और उनके लिए कई विधायी सुधारों की मांग की।

उनका योगदान आज भी ग्रामीण भारत में एक प्रेरणा के रूप में देखा जाता है,और उनके कार्यों का प्रभाव आज भी महसूस किया जाता है।

छोटू राम का सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण

छोटू राम का सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण भारतीय समाज में सुधार और ग्रामीणों के अधिकारों की रक्षा पर आधारित था। उनका मानना था कि जब तक भारतीय किसानों और ग्रामीणों की स्थिति में सुधार नहीं होगा,तब तक स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक विकास की सच्ची दिशा संभव नहीं है। वे एक ऐसे नेता थे,जिन्होंने समाज के कमजोर और शोषित वर्गों के अधिकारों को अपनी राजनीति का केंद्र बनाया। छोटू राम ने न केवल किसानों के लिए आवाज उठाई,बल्कि उन्होंने भारतीय समाज के समग्र सुधार के लिए अपनी आवाज बुलंद की। उनका उद्देश्य था कि भारतीय समाज में समानता और न्याय का राज्य स्थापित हो,जिसमें प्रत्येक नागरिक को उसके अधिकारों का पूरा सम्मान मिले।

उनका सामाजिक दृष्टिकोण किसानों के उत्थान पर विशेष रूप से केंद्रित था। उस समय भारतीय किसान ब्रिटिश शासन की नीतियों और जमींदारी व्यवस्था के कारण बुरी तरह से शोषित हो रहे थे। छोटू राम ने इस शोषण के खिलाफ आवाज उठाई और किसानों के लिए न्याय की मांग की। उन्होंने भारतीय किसानों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया और उनके लिए भूमि सुधारों,करों में राहत,और ब्याज दरों में कमी की दिशा में काम किया। उनका मानना था कि बिना किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत किए,भारत का सामाजिक और राजनीतिक विकास संभव नहीं हो सकता।

राजनीतिक दृष्टिकोण से छोटू राम ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अन्य राजनीतिक संगठनों के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया,लेकिन उनकी प्राथमिकता हमेशा किसानों और ग्रामीणों के हितों की रक्षा थी। वे इस बात के पक्षधर थे कि स्वतंत्रता केवल अंग्रेजों से मुक्ति पाने तक सीमित नहीं होनी चाहिए,बल्कि उसे ग्रामीण जनता और किसानों के जीवन स्तर को सुधारने के रूप में देखा जाना चाहिए। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ समाज में समानता,सामाजिक न्याय,और आर्थिक सुधार की आवश्यकता को भी रेखांकित किया।

छोटू राम का राजनीतिक दृष्टिकोण भारतीय जनता की वास्तविक जरूरतों से जुड़ा था। वे नहीं चाहते थे कि राजनीति केवल महानगरों और उच्च वर्गों तक सीमित रहे। उनका लक्ष्य था कि गरीब किसान, श्रमिक और ग्रामीण जनता को भी राजनीतिक प्रक्रियाओं में हिस्सेदारी मिले और वे समाज के उत्थान के प्रयासों का हिस्सा बनें। उनका यह दृष्टिकोण भारतीय राजनीति में एक नए बदलाव की ओर इशारा करता है,जिसमें ग्रामीणों और किसानों की आवाज को सुना जाता है और उनकी समस्याओं को प्राथमिकता दी जाती है।

छोटू राम का सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण किसानों के कल्याण और ग्रामीण भारत के उत्थान से जुड़ा हुआ था। वे मानते थे कि जब तक समाज के सबसे कमजोर वर्ग को न्याय और अधिकार नहीं मिलेगा,तब तक कोई भी सच्ची सामाजिक और राजनीतिक स्वतंत्रता संभव नहीं है। उनके इस दृष्टिकोण ने भारतीय राजनीति और समाज में एक नए दृष्टिकोण को जन्म दिया,जो आज भी प्रासंगिक है।

किसान आंदोलन में छोटू राम का योगदान

छोटू राम का योगदान भारतीय किसान आंदोलन में अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट था। भारतीय कृषि समाज उस समय ब्रिटिश शासन की नीतियों और जमींदारी व्यवस्था के कारण भयंकर शोषण और समस्याओं से जूझ रहा था। ब्रिटिश सरकार और जमींदारों द्वारा किसानों पर लगाए गए अत्यधिक कर, उच्च ब्याज दरें और भूमि के उत्पीड़न ने किसानों को गहरे संकट में डाल दिया था। छोटू राम ने इस शोषण के खिलाफ सक्रिय रूप से संघर्ष किया और किसानों के हितों की रक्षा के लिए कई आंदोलनों की अगुवाई की। उन्होंने यह महसूस किया कि जब तक भारतीय किसानों की स्थिति में सुधार नहीं होगा,तब तक देश में वास्तविक स्वतंत्रता और समृद्धि संभव नहीं हो सकती।

छोटू राम ने किसानों की समस्याओं को राजनीतिक मंचों पर उठाया और उनकी समस्याओं को राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाया। उनका पहला प्रमुख कदम 1920 के दशक में किसानों के हक के लिए आंदोलन शुरू करना था। उन्होंने किसानों को जागरूक किया और उन्हें यह समझाया कि वे केवल अपने अधिकारों के प्रति सचेत होकर ही अपनी स्थिति को सुधार सकते हैं। उन्होंने किसानों के लिए उचित मूल्य,ऋण मुक्ति, और कड़ी कर प्रणाली के खिलाफ आवाज उठाई। छोटू राम ने जमींदारी प्रथा और भूमि सुधार के लिए सक्रिय प्रयास किए,जिससे किसानों को अपनी ज़मीन पर अधिकार मिल सके और उन्हें शोषण से राहत मिल सके।

किसानों की समस्याओं को लेकर छोटू राम ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अन्य राजनीतिक दलों में लगातार दबाव डाला। उन्होंने भारतीय किसानों के अधिकारों को राजनीतिक एजेंडे का हिस्सा बनाने की दिशा में काम किया। छोटू राम का यह मानना था कि अगर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को वास्तविक सफलता प्राप्त करनी है,तो उसे ग्रामीण भारत और किसानों की आवाज़ को अवश्य शामिल करना होगा। उनके योगदान से भारतीय राजनीति में यह संदेश गया कि किसान,जिनकी संख्या देश की सबसे बड़ी वर्ग है, उनके बिना कोई भी आंदोलन अधूरा रहेगा।

इसके अलावा,छोटू राम ने किसानों के लिए एक उचित कृषि नीति की भी वकालत की,ताकि उनके जीवन स्तर में सुधार हो सके। उन्होंने किसानों के लिए राहत योजनाओं की ओर ध्यान आकर्षित किया और यह सुनिश्चित किया कि सरकार की योजनाओं से किसान लाभान्वित हों। वे किसानों के संगठन और एकता के पक्षधर थे,ताकि वे एकजुट होकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर सकें।

इस प्रकार, छोटू राम ने भारतीय किसान आंदोलन को एक नई दिशा दी और उसे व्यापक राजनीतिक मंच पर स्थान दिलाया। उनके द्वारा किए गए प्रयासों के कारण, भारतीय किसान आंदोलन ने अधिक गति पकड़ी और किसानों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उनका योगदान न केवल स्वतंत्रता संग्राम के लिए, बल्कि भारतीय कृषि समाज के लिए भी ऐतिहासिक और स्थायी था।

स्वतंत्रता संग्राम में छोटू राम का योगदान

छोटू राम का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण था,खासकर उस समय जब भारतीय जनता ब्रिटिश शासन के खिलाफ आक्रोशित और जागरूक हो रही थी। छोटू राम ने न केवल किसानों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया,बल्कि वे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के भी एक सक्रिय भागीदार थे। उनका यह मानना था कि भारतीय स्वतंत्रता तभी संभव है जब समाज के सबसे कमजोर वर्ग,अर्थात किसानों और ग्रामीणों, को अपने अधिकार

मिलेंगे और उन्हें शोषण से मुक्त किया जाएगा। इसके लिए उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेते हुए ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ कई आंदोलनों में योगदान दिया और भारतीय जनता को संगठित करने का प्रयास किया।

छोटू राम ने स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका को किसानों के अधिकारों के साथ जोड़ते हुए भारतीय समाज को जागरूक किया। वे मानते थे कि स्वतंत्रता केवल अंग्रेजों से मुक्ति पाने तक सीमित नहीं होनी चाहिए,बल्कि यह तब सच्ची होगी जब समाज के हर वर्ग को समान अधिकार मिले,विशेषकर ग्रामीण और किसान वर्ग को। 1920 के दशक में,जब महात्मा गांधी ने असहमति आंदोलन और नागरिक अवज्ञा जैसे आंदोलनों की शुरुआत की,छोटू राम ने किसान आंदोलनों के जरिए उनकी रणनीतियों का समर्थन किया और किसानों को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ने के प्रयास किए।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान,छोटू राम ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच से ब्रिटिश शासन की नीतियों और उनके द्वारा किसानों के साथ किए जा रहे शोषण की आलोचना की। उन्होंने भारतीय किसानों को यह समझाया कि स्वतंत्रता संग्राम में केवल शहरी जनता की भागीदारी ही नहीं,बल्कि ग्रामीण और किसान समुदाय का भी उतना ही महत्वपूर्ण योगदान है। छोटू राम ने यह भी सुनिश्चित किया कि किसानों की समस्याओं को राष्ट्रीय मंच पर रखा जाए और उनके जीवन स्तर में सुधार के लिए राजनीतिक दबाव डाला जाए।

छोटू राम ने स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ जमींदारी प्रथा,किसानों के शोषण,और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए भी लड़ाई लड़ी। वे किसानों के लिए भूमि सुधार और करों में राहत की मांग करते थे,और उनका यह मानना था कि बिना किसानों के उत्थान के,भारत की स्वतंत्रता अधूरी रहेगी। उन्होंने खुद को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक अग्रणी नेता के रूप में स्थापित किया और किसानों को एकजुट करने के लिए कई आंदोलनों की शुरुआत की।

उनकी रणनीतियों और नेतृत्व के कारण,छोटू राम ने स्वतंत्रता संग्राम में किसानों को एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में स्थापित किया। उनका योगदान भारतीय राजनीति और समाज में एक गहरी छाप छोड़ गया,जो आज भी महसूस किया जाता है। स्वतंत्रता संग्राम में उनका यह योगदान न केवल राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था,बल्कि समाज के सबसे पिछड़े वर्ग की आवाज उठाने के रूप में भी एक प्रेरणा बना।

ग्रामीण जागरूकता में छोटू राम की भूमिका

छोटू राम का ग्रामीण जागरूकता में योगदान भारतीय समाज के सबसे बड़े वर्ग,अर्थात किसानों और ग्रामीण जनता,के उत्थान और सशक्तिकरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। उस समय,जब अधिकांश भारतीय ग्रामीण इलाकों में शिक्षा और सामाजिक जागरूकता की कमी थी,छोटू राम ने अपनी कड़ी मेहनत और समर्पण से ग्रामीणों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया। उनका यह मानना था कि जब तक भारत के ग्रामीण इलाकों और किसानों की स्थिति में सुधार नहीं होगा,तब तक देश का समग्र विकास असंभव रहेगा। इसलिए,उन्होंने ग्रामीणों में जागरूकता फैलाने और उन्हें सामाजिक,राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों के प्रति सजग बनाने के लिए कई उपाय किए।

छोटू राम ने भारतीय किसानों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए विशेष रूप से कार्य किया। उस समय ब्रिटिश शासन और जमींदारी प्रथा के कारण किसानों का शोषण किया जाता था, जिससे वे अपनी समस्याओं

और अधिकारों से अनभिज्ञ थे। छोटू राम ने किसानों को यह समझाया कि उन्हें एकजुट होकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना होगा,ताकि वे शोषण से मुक्त हो सकें। उन्होंने किसानों के लिए आंदोलन चलाए,जैसे कि करों में कमी,भूमि सुधार,और उचित ऋण नीतियाँ,जो उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत बना सकें। इसके अलावा,उन्होंने किसानों को यह भी बताया कि उनके संघर्ष में भागीदारी केवल उनके जीवन स्तर को ही सुधारने के लिए नहीं,बल्कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

छोटू राम ने अपने समय में ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की आवश्यकता को भी महसूस किया और इसे बढ़ावा देने का प्रयास किया। उनका मानना था कि बिना शिक्षा के कोई भी समाज प्रगति नहीं कर सकता, विशेष रूप से ग्रामीण समाज,जो बहुत हद तक पिछड़ा हुआ था। उन्होंने ग्रामीण इलाकों में शिक्षा के प्रसार के लिए कई कार्य किए और लोगों को यह समझाने की कोशिश की कि शिक्षा ही उन्हें अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक कर सकती है।

इसके अतिरिक्त, छोटू राम ने ग्रामीणों को सरकारी नीतियों और योजनाओं के बारे में जानकारी दी और यह सुनिश्चित किया कि वे उन योजनाओं का लाभ उठा सकें। उन्होंने यह काम किया कि सरकारी योजनाओं का लाभ सिर्फ शहरी वर्ग तक सीमित न रहे,बल्कि वे किसानों और ग्रामीणों तक भी पहुंचे। इसके लिए उन्होंने कई बार सरकारी अधिकारियों से बातचीत की और ग्रामीणों के लिए अधिक से अधिक राहत देने के लिए दबाव डाला।

छोटू राम ने ग्रामीण समाज में एकता और संगठन की भावना को भी बढ़ावा दिया। उनका मानना था कि अगर किसान और ग्रामीण एकजुट होकर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करेंगे,तो वे किसी भी शोषण से मुक्त हो सकते हैं। उन्होंने विभिन्न ग्रामीण संगठन स्थापित किए और उन्हें सक्रिय रूप से किसानों और ग्रामीणों की समस्याओं के समाधान में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उनका यह कार्य भारतीय समाज में एक नई जागरूकता की लहर लेकर आया,जो आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावी रूप से देखा जाता है।

इस प्रकार,छोटू राम ने ग्रामीण जागरूकता में अपनी भूमिका से भारतीय समाज को एक नई दिशा दी और समाज के सबसे कमजोर वर्ग को सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए। उनके योगदान का आज भी गहरा प्रभाव है,और उनकी कार्यशैली भारतीय किसानों और ग्रामीणों के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

छोटू राम के योगदान का महत्व और प्रभाव

छोटू राम का भारतीय राजनीति और समाज में योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली था, खासकर किसानों और ग्रामीण जनता के लिए। उनका कार्य न केवल स्वतंत्रता संग्राम में,बल्कि भारतीय समाज में समग्र सुधार और जागरूकता के संदर्भ में भी गहरे प्रभाव डालने वाला था। छोटू राम ने किसानों के शोषण और असमानता के खिलाफ संघर्ष किया और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। उनके कार्यों ने भारतीय समाज में एक नया दृष्टिकोण उत्पन्न किया,जिससे ग्रामीण इलाकों में सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता बढ़ी। उनका योगदान आज भी भारतीय समाज में जीवित है और उनके विचारों से प्रेरणा ली जाती है।

छोटू राम ने भारतीय किसानों के लिए कई सुधारों की मांग की,जैसे भूमि सुधार,करों में राहत और ब्याज दरों में कमी। ब्रिटिश शासन और जमींदारी व्यवस्था के तहत भारतीय

किसान शोषण का शिकार थे। छोटू राम ने उनके अधिकारों के लिए आवाज उठाई और उन्हें यह समझाया कि अगर वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होंगे,तो उनका शोषण हमेशा चलता रहेगा। उनके प्रयासों के कारण भारतीय किसान आंदोलन को एक नई दिशा मिली, और किसानों की समस्याओं को राष्ट्रीय मंच पर रखा गया। इसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को भी एक नया आयाम दिया,जिसमें किसानों और ग्रामीणों की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई।

इसके अलावा, छोटू राम ने ग्रामीण जागरूकता के क्षेत्र में भी अनमोल कार्य किए। उन्होंने ग्रामीणों को शिक्षा और सामाजिक सुधारों के बारे में जागरूक किया। वे मानते थे कि जब तक भारतीय ग्रामीण समाज को शिक्षा और जागरूकता नहीं मिलेगी,तब तक समग्र विकास संभव नहीं है। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि सरकार की योजनाओं और नीतियों का लाभ केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित न रहे, बल्कि इसका विस्तार ग्रामीण इलाकों में भी हो। उनका उद्देश्य था कि ग्रामीण जनता को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में समझाया जाए,ताकि वे स्वयं अपने हितों की रक्षा कर सकें।

छोटू राम का योगदान केवल राजनीति तक सीमित नहीं था। उन्होंने भारतीय समाज के कमजोर वर्गों,विशेषकर किसानों,के लिए अपनी आवाज उठाई और उनका कल्याण सुनिश्चित करने के लिए कई आंदोलन चलाए। उनका यह योगदान आज भी प्रासंगिक है,क्योंकि आज भी भारतीय समाज में किसानों और ग्रामीणों के अधिकारों की रक्षा की आवश्यकता बनी हुई है। छोटू राम ने जिस प्रकार भारतीय किसानों और ग्रामीणों को जागरूक किया और उन्हें संगठित किया,वह भारतीय राजनीति में एक ऐतिहासिक कदम था। उनके कार्यों का प्रभाव आज भी भारतीय राजनीति और समाज में महसूस किया जाता है, और उनका योगदान हमेशा याद किया जाएगा।

निष्कर्ष

छोटू राम का जीवन और उनके कार्य भारतीय समाज,विशेष रूप से ग्रामीण भारत के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बने हुए हैं। उनका योगदान न केवल स्वतंत्रता संग्राम में था,बल्कि उन्होंने भारतीय किसानों और ग्रामीणों के अधिकारों की रक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण कार्य किए। उनका यह मानना था कि जब तक भारतीय किसान और ग्रामीण समाज सशक्त नहीं होंगे,तब तक देश की स्वतंत्रता अधूरी रहेगी। इस दृष्टिकोण से उन्होंने न केवल राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया,बल्कि समाज के सबसे कमजोर वर्ग,अर्थात किसानों,के लिए आंदोलन किए और उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य किया।

छोटू राम ने भारतीय किसानों के शोषण के खिलाफ आवाज उठाई और उनकी समस्याओं को राजनीतिक रूप से उठाया। उनका यह दृष्टिकोण था कि समाज में हर वर्ग को समान अधिकार मिलें,और इसके लिए उन्होंने भूमि सुधार,करों में राहत,और जमींदारी प्रथा के खिलाफ आंदोलन किए। उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि भारतीय किसानों को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक किया जाए और उन्हें अपने संघर्षों के लिए एकजुट किया जाए। उनका यह योगदान आज भी भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण माना जाता है,क्योंकि उन्होंने किसानों की समस्याओं को एक राष्ट्रीय मुद्दा बना दिया।

ग्रामीण जागरूकता के क्षेत्र में भी छोटू राम का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण था। उन्होंने ग्रामीण समाज में शिक्षा,संगठन और सामाजिक जागरूकता के महत्व को पहचाना और इसे फैलाने का प्रयास किया। उन्होंने यह

समझाया कि बिना शिक्षा के,ग्रामीण समाज की स्थिति में सुधार संभव नहीं है,और इसके लिए उन्होंने कई कदम उठाए। उन्होंने सरकारी नीतियों और योजनाओं के बारे में ग्रामीणों को अवगत किया,ताकि वे उनका अधिकतम लाभ उठा सकें।

स्वतंत्रता संग्राम में भी छोटू राम ने महत्वपूर्ण योगदान दिया,खासकर किसानों को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ने की दिशा में। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि भारतीय किसानों को स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका का एहसास हो और वे भी अंग्रेजी शासन के खिलाफ संघर्ष करें। उनका मानना था कि भारतीय स्वतंत्रता तभी सच्ची होगी जब किसान और ग्रामीण समाज शोषण से मुक्त होंगे।

इस प्रकार,छोटू राम का योगदान न केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित था,बल्कि उन्होंने भारतीय समाज के हर वर्ग,विशेष रूप से किसानों और ग्रामीणों,के उत्थान के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए। उनका कार्य आज भी प्रासंगिक है और भारतीय राजनीति तथा समाज में उनका योगदान एक स्थायी धरोहर के रूप में जीवित रहेगा। छोटू राम ने भारतीय जनता,विशेषकर ग्रामीणों, को अपनी ताकत और अधिकारों का एहसास दिलाया और उन्हें अपने संघर्षों के लिए प्रेरित किया। उनके विचार और कार्य आज भी समाज के सभी वर्गों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

संदर्भ:

1. तिवारी,महेश.(2016) भारत में किसानों की स्थिति और संघर्ष.ज्ञान प्रकाशन.

2. यादव,सुमित्रा.(2019)भारतीय कृषि नीतियों का प्रभाव: एक समीक्षा. कृषि और ग्रामीण विकास जर्नल, 22(3), 45-59.

3. शर्मा,अरुण (एड.)(2018)भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर विचार. भारतीय प्रकाशन.

4. श्रीवास्तव,विजय.(2021,5 जुलाई)भारतीय किसान आंदोलन और उसकी आधुनिक प्रासंगिकता. कृषि और समाज वेबसाइट.

5. यादव, राकेश.(2017) स्वतंत्रता संग्राम में किसान आंदोलन का योगदान. शर्मा,र. (एड.), भारत के स्वतंत्रता सेनानी (pp. 120-135). विजय प्रकाशन.

6. गुप्ता,रामेश्वर.(2020,12जनवरी)भारतीय किसान की बढ़ती समस्याएं.दैनिक जागरण, प. 4.

7. भारत सरकार.(2018). कृषि नीति और किसान हित (रिपोर्ट). मंत्रालय of कृषि और किसान कल्याण.

8. सिंह, रानी.(2019).भारत में ग्रामीण समाज और किसान आंदोलन: एक अध्ययन (अध्यक्ष, डॉ. राजन कुमार)दिल्ली विश्वविद्यालय.

9. श्रीवास्तव, नरेश.(2015) किसान की तकलीफें: कविता संग्रह. साहित्य संस्थान.

10. कुमार, अजय.(2020, 20 अगस्त)छोटे राम: भारतीय किसानों के लिए एक नायक. कृषि नीति ब्लॉग.

Corresponding Author: Dr. Rajesh Kumar
E-mail: rajeshtomar2003@gmail.com
Received: 15 January 2025; Accepted: 22 January, 2025.
Available online: 30 January, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License